नई दिल्ली । शनिवार 17 जुलाई 2010 । आषाढ़ 26 शक 1932 । आषाढ़ शुक्ल 6/7 विक्रम 2067 । पेज 30* । मूल्य 3.50 रु. या 6 रु. द टाइम्स ऑफ इंडिया साहत । www.nbt.in । www.nav

NBT

YOUNG INDIA YOUNG PAPER

नवभारत टाइम्स

नवीन जिंदल ने अपनी सैलरी की बच्चों के नाम - p20

साइना को आमिर का सलाम, विश किया - p24

ब्राह्मी, अश्वगंधा पर भी थी कब्जे की तैयारी

सुरेश उपाध्याय ॥ नई दिल्ली

हिंदुस्तानियों की परंपरा में बसी ब्राह्मी पर भी नजरें गड़ा दी गई। लेकिन हल्दी, नीम, पुदीना और कमल की जंग जीतने के बाद केंद्रीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) ने ब्राह्मी के साथ ही अश्वगंधा, चाय की पत्तियों और हल्दी पर कब्जे की विदेशी साजिश को नाकाम कर दिया है।

ब्राह्मी

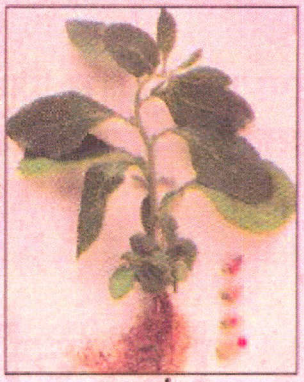

अश्वगंधा

भारत की दौलत

ठंडे इलाकों में पाई जाने वाली **ब्राह्मी** चटख हरे रंग की होती है। इसका बॉटनिकल नाम बाकोपा मोनिएरी है। याददाश्त बढ़ाने के लिए आयुर्वेद में इसका इस्तेमाल सदियों से होता आया है।

अश्वगंधा का बॉटनिकल नाम विथानिया सोमनिफेरा है। यह ताकत और खूबसूरती बढ़ाने वाली दवा है। इसे गठिया की भी एक अच्छी दवाई माना जाता है। ऐसी ही एक जड़ी जिनसेंग चीन में पाई जाती है।

जेन मैरिनी स्किन रिसर्च इनकॉरपोरेशन अमेरिका की स्किन केयर प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी है। इसने ब्राह्मी, अश्वगंधा, चाय की पत्ती और हल्दी के संयोग से बनाए गए एक स्किन केयर प्रोडक्ट के पेटेंट के लिए आवेदन कर दिया था। कंपनी ने इन चारों को चेहरे की रौनक बढ़ाने के साथ ही झुर्रियां दूर करने वाला बताते हुए यूरोपियन पेटेंट ऑफिस (ईपीओ) में आवेदन किया था।

टीकेडीएल के निदेशक वी. के. गुप्ता बताते हैं कि जेन मैरिनी के इस कदम की सूचना मिलते ही ईपीओ में भारत की ओर से विरोध दर्ज कर दिया गया। ईपीओ को दस्तावेजों और पांडुलिपियों की मदद से बताया गया कि ब्राह्मी, अश्वगंधा, चाय की पत्ती और हल्दी का इस्तेमाल भारत में सौन्दर्य प्रसाधनों के अलावा औषधि के रूप में सदियों से किया जा रहा है। ब्राह्मी याददाश्त को बढ़ाने वाली, कोलेस्ट्रॉल को कम करने वाली और एंटी ऑक्सिडेंट (शरीर से विषैले पदार्थों को निकालने वाली) भी है। हल्दी पर कब्जा करने की एक कोशिश पहले अमेरिका में भी हुई थी। तब एक अमेरिकी कंपनी ने इसे घाव जल्दी भरने वाली दवा में इस्तेमाल करते हुए इस पर अपना कब्जा करना चाहा था। जेन मैरिनी हल्दी को सूजन कम करने वाली बताते हुए इस पर कब्जा करने की फिराक में थी।

जेन मैरिनी ने अपने प्रोडक्ट को पेटेंट कराने के लिए 2006 में आवेदन किया था। इसका विरोध करने में इतनी देरी क्यों हुई? इसके जवाब में गुप्ता बताते हैं कि यूरोपियन पेटेंट यूनियन से भारत सरकार का समझौता जुलाई 2009 में हुआ था और इसके फौरन बाद भारत एक्टिव हो गया। भारत के चैलेंज के बाद जेन मैरिनी को पीछे हटना पड़ा।